e-ISSN No. 3107/6564

भाग 01 अंक 05 / अक्टूबर 2025

e-ISSN No. 3107/6564

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)

Contact to us - E-mail: editorinchief@naso.org.in / website: www.naso.org.in

e-ISSN No. 3107/6564

डॉ. भाष्कर दुबे
मुख्य संपादक
ediotorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग, SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –

डॉ. भाष्कर दुबे

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका

पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) 230124

कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007

Website – www.naso.org.in

E-mail – editorinchief@naso.org.in

Contact – 9936902749 / 7068708058

e-ISSN No. 3107/6564

पॉलीहाउस में खीरे की उन्नत खेती

कम समय में अधिक उत्पादन और बेहतर मुनाफा

डॉ० संदीप यादव 'माही' शुआट्स यूनिवर्सिटी, नैनी, प्रयागराज, उ.प्र।

डॉ० भास्कर दुबे सहा० प्रा०, के.आइ.टी. कॉलेज, पीआरएसयू प्रयागराज।

खीरा एक लोकप्रिय सब्ज़ी फसल है, जिसकी मांग पूरे वर्ष बनी रहती है। खुले खेत में खीरे की खेती मौसम, रोग-कीट और तापमान पर निर्भर रहती है, जबकि **पॉलीहाउस तकनीक** अपनाकर किसान खीरे की **सालभर खेती**, बेहतर गुणवत्ता और अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। यही कारण है कि आज खीरे की उन्नत खेती के लिए पॉलीहाउस एक लाभकारी विकल्प बनता जा रहा है।

पॉलीहाउस क्या है?

पॉलीहाउस एक संरक्षित खेती प्रणाली है, जिसमें पॉलीथीन शीट से ढके ढांचे के अंदर फसल उगाई जाती है। इसमें-

- तापमान
- नमी
- प्रकाश
- सिंचाई

को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे फसल को अनुकूल वातावरण मिलता है।

पॉलीहाउस में खीरे की खेती के लाभ

- वर्ष भर उत्पादन की सुविधा
- उच्च गुणवत्ता, चमकदार और समान आकार के फल
- पानी और उर्वरकों की बचत (ड्रिप प्रणाली)
- रोग-कीट प्रकोप में कमी
- खुले खेत की तुलना में 3–4 गुना अधिक उत्पादन
- बाजार में अधिक कीमत और बेहतर लाभ

उपयुक्त किस्मों का चयन

पॉलीहाउस खेती के लिए **हाइब्रिड एवं पार्थेनोकार्पिक (बिना परागण फल देने वाली)** किस्में सर्वोत्तम रहती हैं—

प्रमुख किस्में

- कियान (Kyrian)
- मल्टीस्टार
- खीरा Pusa Hybrid-1
- Himangi
- F1 ग्रीन लॉन्ग

ये किस्में जल्दी फल देने वाली और उच्च उत्पादक होती हैं।

नर्सरी एवं रोपाई

- ✓ बीजों को **कोकोपीट, परलाइट और वर्मीकुलाइट** के मिश्रण में ट्रे में बोएँ
- ✓ 18–22 दिन में पौधे रोपाई योग्य हो जाते हैं
- ✓ रोपाई दूरी: **45–60 सेमी × 60–75 सेमी**
- ✓ बेड की चौड़ाई: 1 मीटर
- ✓ मल्चिंग शीट का उपयोग लाभकारी

तापमान एवं नमी प्रबंधन

कारक	उपयुक्त स्तर
तापमान	18–30°C
आर्द्रता	60–70%
प्रकाश	पर्याप्त एवं समान

अधिक तापमान पर वेंटिलेशन आवश्यक है।

सिंचाई एवं पोषक तत्व प्रबंधन

सिंचाई-

- ड्रिप सिंचाई प्रणाली सर्वोत्तम
- हल्की लेकिन नियमित सिंचाई

e-ISSN No. 3107/6564

उर्वरक प्रबंधन (फर्टिगेशन)-

- नाइट्रोजन : फास्फोरस : पोटाश = 1 : 1 : 1
- कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं सूक्ष्म पोषक तत्व आवश्यक
- 7–10 दिन के अंतराल पर फर्टिगेशन

प्रशिक्षण (TRAINING) एवं छंटाई (PRUNING)

- ❖ पौधों को रस्सी/तार के सहारे ऊपर चढ़ाएँ
- ❖ निचली 4–5 गांठों के फूल व शाखाएँ हटा दें
- ❖ एक मुख्य तने पर खेती करने से उत्पादन बेहतर होता है

रोग एवं कीट प्रबंधन

पॉलीहाउस में रोग कम होते हैं, फिर भी सावधानी जरूरी है —

मुख्य रोग

- पाउडरी मिल्ड्यू
- डाउनी मिल्ड्यू

मुख्य कीट

- सफेद मक्खी
- थ्रिप्स

नियंत्रण उपाय

- पीले स्टिकी ट्रैप
- जैव कीटनाशी
- स्वच्छता एवं संतुलित नमी

कटाई एवं उत्पादन

- रोपाई के 30–35 दिन बाद पहली तुड़ाई
- 2–3 दिन के अंतराल पर तुड़ाई
- औसत उत्पादन: **8–12 किग्रा प्रति पौधा**
- 1000 वर्ग मीटर में 25–30 टन तक उपज संभव

लागत एवं लाभ (अनुमानित)

- प्रारंभिक लागत: अधिक (पॉलीहाउस संरचना)
- प्रति वर्ष 2–3 फसलें संभव
- शुद्ध लाभ: खुले खेत से 3–5 गुना अधिक

सरकारी योजनाओं में **50–70% तक अनुदान** भी उपलब्ध है।

निष्कर्ष-

पॉलीहाउस में खीरे की उन्नत खेती आधुनिक, वैज्ञानिक और लाभकारी तकनीक है। उचित किस्म चयन, पोषक तत्व प्रबंधन और तापमान नियंत्रण से किसान कम समय में अधिक उत्पादन और बेहतर आय प्राप्त कर सकते हैं। बदलते कृषि परिदृश्य में पॉलीहाउस खेती भविष्य की खेती है।

"संरक्षित खेती अपनाएँ – आय बढ़ाएँ"